रेवा की ल्हयर

गौरीशंकर शर्मा "गौरीश"
बलखड़, खरगोन म. प्र.

अपनी बात

अद्यावधि भारतीय साहित्य के रंगमंच पर संस्कृत, बृज, अवधि बंगला, गुजराती, मराठी आदि मधुरतम भाषाओं का कलात्मक अभिनय ही साहित्य प्रेमी दर्शक समुदाय को लुभाता एवं आकर्षित करता रहा । प्रान्तीय भाषाओं का माधुर्य, ओज तथा प्रसाद अदृष्ट के अन्तराल में छिपा रहा । समय के साथ ही प्रान्तीय भाषाओं का रुप, रंग एवं यौवन निखरा और साहित्य प्रेमी मधुप रसास्वादन हेतु उस ओर मंडराने लगे । परिणाम-स्वरुप आज प्रत्येक प्रान्तीय भाषा अपनी चहारदीवारी को लांघ कर राष्ट्र के सहृदय रसिक साहित्य समाज के हृदय पर अपना आसन जमाए हुए है ।

निमाड़ी का अपना अत्यन्त ही विस्तृत एवं प्राचीनतम क्षेत्र होते हुए भी सर्वथा अभिनव एवं अछूता है ।

ब्रह्मगीर, मनरंगीर, सन्त सिंगा, दलूदास आदि कई संत कवियों ने निमाड़ी भाषा के माध्यम से ही निर्गुण ब्रह्म की उपासना में ऐसे सरल, सरस, सुमधुर साहित्य की संरचना की जो संत कबीर की तुलना में न्यूनाधिक नहीं कहा जा सकता । सन्त सिंगा से लेकर वंकट आनन्दराम तक जीव, काया, माया और ब्रह्म पर निमाड़ी निर्मल निर्झर का प्रवाह सतत गतिमान रहा । इसके पश्चात आज के रचनाकारों ने भी अपनी लेखनी को विराम नहीं दिया । इसी प्रकार निमाड़ी भाषा के माध्यम से मेरा यह लघु प्रयास भी "रेवा की लहयर" के रुप में प्रस्तुत है ।

गौरीशंकर शर्मा 'गौरीश'

कविता कुटीर बलखड़

भूमिका

रामनारायण उपाध्याय
"पद्म श्री"
साहित्य कुटीर ब्राह्मणपुरी
खण्डवा ४५०००१

स्वयं के मूल भावों को दूसरों तक उसी रुप में संप्रेषण करने का माध्यम ही भाषा है। लोक भाषाएं इस कार्य हेतु अत्यन्त ही सशक्त मानी गई है।

निमाड़ी मध्य प्रदेश के एक विशाल क्षेत्र की अत्यन्त ही सशक्त लोक भाषा है। इसका परिष्कृत स्वरुप सन्त सिंगा की ही देन है। जिस प्रकार सन्त तुलसी के बिना अवधि एवं सूरदास के बिना बृज भाषा का कोष खाली खाली सा लगता है उसी प्रकार सन्त सिंगा के बिना निमाडी साहित्य का कोष भी अधूरा ही कहा जा सकता है।

निमाडी भाषा को श्री वृद्धि में आज का साहित्यकार भी पीछे नहीं है इसी कड़ी में श्री गौरीशंकर शर्मा 'गौरीश' का योगदान भी सराहनीय है। निमाडी कविता के माध्यम से श्री गौरीश ने अपनी अलग पहिचान बनाई है। उनकी 'हर हर नरबदा माय ओ' और 'बीरपस' तो निमाड़ क्षेत्र का लोकगीत ही बन गई है। संजा फूली की रचना में जिन उपमाओं का प्रयोग किया गया है वह सर्वथा अछूता ही प्रतीत होता है। आखों के लिये बादाम की बीजी, कमर को आकाश में चमकने वाली बिजली की उपमा का प्रयोग एकदम मौलिक एवं नवीनता लिए हुए है।

'रेवा की लहयर' उनकी कविताओं का संग्रह निमाड़ी लोकभाषा को श्री वृद्धि में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण माना जावेगा।

Edited and Compiled
by Mridul Vikas Sharma(Grandson)

रेवा की ल्हयर

अनुक्रमणिका

१	हर हर नरबदा माय ओ	१
२	माड़ी जाया	३
३	धरती को याव	५
४	बाल विधवा	६
५	होली आई रे	१०
६	धरती को सत	११
७	नर्बा गंगा	१२
८	बरखा - वऊ	१४
९	धरती को लाल	१७
१०	वणजारा की वऊ	१९
११	म्होनत राणी	२०
१२	संदशो	२२
१३	वीरपस	२३
१४	धरती को सत	२५
१५	वरखा	२६
१६	स्वयंवर	२७
१७	विरदूली	२८
१८	आजादी	२९
१९	रितु आई रे	३१
२०	रसीलो फागुण	३२
२१	चांदणियो	३३
२२	वावणो	३४
२३	चांद अरु धरती	३५

२४	पग पग रे चलो	३७
२५	तीजो दीजो वाँजूली क ऽ	३८
२६	आयो रे मयनू कुवार	३९
२७	हड़पो	४०
२८	मक्का	४१
२९	रेवा मैया रेवा ओ	४२
३०	चल चल चल ओ दा	४४
३१	संजा फूली	४५
३२	निमाड़ी गीत	४७
३३	सिलगी रे सिलगी सुरिया की तापणी	४९
३४	निमाड़ी लोक गीत	४९

• श्री •

हर हर नरबदा माय ओ

हो हो हर हर, नरबदा माय ओ ।
तू तो मैकल की, बेटी कवाय ओ ।।
विन्ध्य न सतपुड़, थारा दुई भाई ।
खम्बात छे थारी माय ओ ।

(१)

चाँद सुरिज थारा, खोळा मं खेल ।
जिनको तू सुख दुख, छाती पऽ झेलऽ
थाग थारा हिवड़ा को, कोई न नी पायो
ममता छे थारी अथाय ओ
तू तो मैकल ....

(२)

संध्या माथा प थारा, सेन्दूर लगाव ।
तारा थारी नीळी नीळी, चुन्दड़ सजाव ।।
रति सी सवाई, थारी खूबसुरती ।
चाँदणियो जेमण गोता खाय ओ
तू तो मैकल ---

(३)

थारी परछाई लइ न, गगन यो फूल्यो ।
गरब का हिन्दा मं, रात भर झूल्यो ।।
दिन मं उधारी, रकम दपड़ावऽ ।
यो अंधारा मं टिप्पस जमाय ओ ।।
तू तो मैकल ....

(४)

तधो नद तुख देवि ! पन्नण ख आयो ।
थारो कुवांरो पण तेपs गरमायो ।।
पेट मं राखी तेखs, बेटो बणायो ।
तू अबी बी कुवारी माय ओ ।।
तू तो मैंकल ....

(५)

थारा जेतरा कंकर, ऊ सारा संकर ।
सिव - भगत तू , दास थारा प्रलयंकर ।
आपस मं तम एक दूसरा ख पूजो ।।
दुजना भाव मिटाय ओ ।
तू तो मैकल ....

(६)

सारी कमई दुई तट प s बिछाई ।
जो तू अमर कण्टक सी लाई ।।
अन-धन जन-जन ख, वन वन वाट्यो ।
थारी माटीं सोन्नू उगाय ओ ।।
तू तो मैकल ....

(७)

कदी तो तू खोळा का बाळ धवाड़s ।
घुस्सा मं कदी कदी उनखs ववाडs ।।
माड़ूली ख एतरो घुस्सो नीं चायजे ।
सबै थारा बाळक आय ओ ।।
कोई तो पापी कोई धरमी कवाय ओ ।
तू तो मैकल ....

❀ ❀ ❀

माड़ी जाया

माड़ी जाया वीरा म्हारा, लेण ऽ तू आयो ।
काई काई हाउस, भरात न लायो ॥ टेक ॥

(१)

पीयर न सासरो, तो सारको छे वीरा ।
य्हां बी छे गोपी न य्हां बी छे मोरा ॥
सासूजी की ममता माड़ूली सी जादा ।
ससरा को लाड़ अपणा दादा सी जादा ॥
देवर न जेट म्हारा नाना मोटा वीरा ।
खुल ऽ असाजड्या जसा मूंदी मं हीरा ॥
नणदुली बाई म्हारी बणी बइणुली ।
इनी बाग मं तो हाऊ रऊं फूली - फूली ॥
देराणी जेठाणी म्हारी सग्गी सएली ।
वाड़ी म लाड़ीवऊ हाऊ तो चमेली ॥
हिली - मिली ग्रस्ती को बिरवो लगायो ।
सासूजी न समता सी तेखऽ वधायों ॥
माड़ी जाया .... । टेक ।

(२)

य्हाँ की नानी सी चीज मख ऽ लग ऽ प्यारी ।
भाव मख ऽ य्हां को धान बाजरो जुवारी ॥
सपना मं पीयर को सुख भी हाऊं देखूं ।
जागी न सपना ख सच्चो बी लेखूं ।
थारी दिएल गाय कामधेनू कवाई ।
मन का मनारत पुरवण ख आई ॥
परेम की खेती थारा जोजाजी वावऽ ।
पाणी देण सुख की वा सुरसरी आवऽ ॥

कलप वरकस छे अम्बुवा को गोड़ऽ ।
पार करऽ वैतरणी बैल्या न की जोड़ऽ ॥
संवदारा सी म्हंई की मटकी य्हां धमकऽ ।
मुकती को लोणी जेमण चम चम चमकऽ ॥
भुई य्हां की म्हारा लेणऽ सरग बणी रे ।
सबका सबई हम तेका धणी रे ॥
राजा इन्दर देखण तेख आंगणा म आयो ।
माटी मं तन मन अपणू मिलायो ॥
माड़ी जाया .... । टेक ।

(३)

कसी जाउँ सरग क छोड़ी न वीरा ।
भोजइ क म्हारी बंधावजे रे धीरा ॥
कयजे कि इना साल पीयर नी आउंगा ।
बुरो मानजो मत उना साल आउंगा ॥
"ऊ" बी गयाज नानी नणंद क लावणऽ ।
"वा" बी आवग मखऽ मामी बणावणऽ ॥
नणदूली बाई की हाऊं स्याउड़ सारुंगा ।
चान्द सा भाणिज को मुखड़ो निहारुंगा ॥
खुसी होयगा म्हारो नणदूली को वीरो ।
बदला म देगऽ मखऽ खोळा को हीरो ॥
सासूजी का लाल को हाऊं लाल लई न आऊंगा ।
पयलऽ इनका गीत वीरा पाछऽ थारा गाऊंगा ॥
सगळो पीयर सासरिया मं समायो ।
माड़ी जाया .... । टेक ।

धरती को याव

काळी काळी बादळी मं दादुर गोरी गोरी ।
चमकण लागी चम्म चमाचम चाँदी की वा दोरी ।।
दादुर गोरी गोरी ।।

हळू हळू हाथिण सी चलती हवा झूमती आई ।
अरु समुन्दर का छोरा की वा वरात लइ आई ।।
दणन् दणन् नंगारा वाज्या राजा इन्दर आया ।
धरती अरु वादला का फिरी गोरज लगिण लगाया ।।
पाणी बाबा आवS काकड़ी भुट्टा वैंसी लावS ।
कयणS लाग्या पोरया पोरी, दादुर गोरी गोरी । १

चाँदणियारी रात, याव की पयली परथम रे ।
लुकतो छिपतो पगलो बदळो आयो रुमझुम रे ।।
सरमायी चाँदणी, चाँदकी दपड़ी गइ वा कोर ।
गुपचुप हुई गई वात, रात मS नाच्यो मन को मोर ।।
धरती वादळ मिळ्या, कि सारा तारा ऊबा बळ्या ।
चाँद की चिठ्ठी रई गई कोरी,
दादुर गोरी गोरी ।। २

थोड़ा दिन मं टुटी सरम, जवं देखो तवं संगात ऊ ।
दिन छतS बी मिलता, पूछो इन्द्र धनुस सी वात ऊ ।।
रुणुक झुणुक झुण आयो, सरावण अमरित रस वरसायो ।
हसी खुसी सी भर्‌यो संदेसो, सबइ दूर पोइचायो ।।
घरमण वाजी थाळी रे, पैदा हुई हरियाली रे ।
उनकी पयली खोल की छोरी ।
दादुर गोरी गोरी ।। ३

ल्ह्या ल्ह्या करती रणलागी, नयणा वरसण लाग्या ।
छोरी क समजावण खातिर, कीड़ा मकोड़ा आग्या ।।
सजी दुरबड़ी का हिन्दा पऽ नन्नो कऽ पौढ़ाई ।
हवा हिंड़ोळा देणऽलागी, सखी सहेल्यां आई ।।
गोगल गैया आई ।
सोई जा ओ नानी छोली मंऽ ।
कुतरा जा से होली मंऽ ।
डेडर अरु पपइयण ।।
"टर टर" "पिड पिड" गावऽ लोरी ।।
दादुर गोरी गोरी ।४

बाल - विधवा

हाऊँ गयो गाँव की नद्दी पर
खळ – खळ खळ – खळ वा वयती थी ।
अपणा मुखड़ा सी काई जाणा
काई केको दुखड़ो कयती थी ।।
कइ कांकी बोली थी ओकी
नी म्हारी समज मं आवती थी ।
बस ढेर ढेर आँसू अपणा
संगात मं दुखिया लावती थी ।।
केत्ती उप्पर सी पडती थी
वा रड़ती रड़ती जाती थी ।
माथो कुटतो कयड़ा दगड़ा सी
कुढ़ती – कुढ़ती जाती थी ।।

वई धूं उठतो थो दूर जरा
जो सरग की पयड़ी चड़ीरयो ।
हाँऊ समजो कोई कोई की दुनिया कऽ
सूनी सूनी करी गयो ।।

काई केकी मांग का मोती बी
ढाटा का उप्पर पड़ेल था ।
नानी नानी कावळई न का
कटका बटका बी झड़ेल था ।।

जो गोरा गोरा हात न मं
झोका खाता हलता डुलता ।
अरु सरग सी बी वट्टू जिनकऽ
जां अण गिनतो था सुख मिलता ।।
अवं हात पड़या ओका सूना ।
सुख गया न दुख आया दूणा ।।

फिरी गयो गांव मं सुण्यो मनऽ
ऊ किस्सो तो हांऊ घबराण्यो ।
उनीं नद्दी का घयरा दुख कऽ
फिरी सच्ची सच्ची हाँऊ जाण्यो ।

एक बड़ा साब को पोतो थो.
कई याव नी ओको हो तो थो ।
ओकऽ दम की बीमारी आयेल थी
सबसी या वात छिपायल थी ।।

भोला सा एक गरिबड़ा न
अपणी छोरी छोटी दइ दी ।
उना याव का भुक्या कऽ ।
घिव सी लच लच गोरी रोटी दईदी ।।

अरे इनो कली को अब्बी सी
तमन कई देओ क्यों याव कर्यो ।
तम पांच बण्या परमेसर था
तमन ओको काई न्याव कर्यो ?

संग गुडया गुड़ी को छोड़ी न ।
नवा घर सी नातो जोडी न ।।
माय बाप का लाड़ क तोड़ी न ।
वा ससरवाड़ मंऽ आई थी
केतरी सुख की उम्मेद न को ।
संसार साथ मंऽ लाई थी ।।

फिरी ऊज हुयो जो थो होणू ।
ओका भाग मं थो ढस ढस रोणू ।।

कुमलइ गइ खुसी बिचारी की
पोइचइ गइ मांग बिचारी की ।
माय बाप की राज दुलारी की ।।
अरे, यावता काई कुवारी की ।

हां टूट्यो कुवारो पण बी नई ।
ओको धणी मर्यो वा विधवा हुई ।।

झट सासू कयणऽ लगी असी
या डावकण खाई गई छोरा क ।
म्हारो खोळो सूनू कर्यो इन ।।
खाइ गइ म्हारा दुद का दोरा क

दुई चार क पूछो असो मनऽ
काइ अरे ! सबइ तम अंधा छे ।
बस मसकी देणू कळी न खऽ
काई ईज तमारा धंधा छे ।।

तो तुळस्यो भाई कयण लाग्यो
इन अगला जलम मं पाप कर्यो ।
तेकासी भरी जवानी मं
एपड दुख आयो एको धणी मर्यो ।।

सासू का जुलुम हुया ओपर
नणदल का जुलुम हुया ओपर
अरु यो समाज काई करतो थो ।
किच्चड़ उछाळ तो थो उप्पर ।।

वा अई की रई नी वई की रई
हसती आई थी पण रड़ती गई ।
गेरी दी घर सी ढोर जसी
वा कुढ़ती गई तड़फड़ती गई ।।

उना घर सी टाळो करयो अरे ।
ओका चरित क काळो करयो अरे ।।
पण रेवा सरकी निरमल वा :
अरु कुसुम कली सो कोमल वा ।।

हाँ गवा चायजे नद्दी का
तम दुख का झटका क पूछो ।
ऊ ढाटा पर जो पडेल छे ।
कावळइ का कटका क पूछो ।।

अवं तमज कवो उन्न काई करनू ।
अवं जिवणू अरु कसो मरनू ।।

तम पांच बणो रे परमेसर
उनी विधवा को कई न्याव करो ।
विधवा काई करण कुवारी की
तम मांग भरो अरु याव करो ।।

होळी आई रे

खुल्या बाग का भाग, फागुन को छायो अनुराग।
    होळी आई रे, मस्ती लाई रे ॥
प्राची हिंगूळ्या होटन सी कई गाव ऽ।
    सूता भवरा को, सूतो प्यार जगाव ऽ ॥
सरमाता सुरियान ऽ हात लगाया।
    बेसरम कुवारी कली न का मन भाया ॥
तितली को तड़क्यो रंग कळी को हुई समादी भंग।
    चिड़ै चच्चाई रे ॥ १ ॥

भाई कामदेव नऽ आज कामठी ताणी।
    लिम्बू नारंगी की ज्वानी इतराणी ॥
राजा गुलाब प ऽ चड़्यो खुमार सवायो।
    भैया बबूल नऽ पेळो रंग वरसायो ॥
पिपळा पेऱ्या चिकणा पात हजाऱ्या फूल्यारे कई भात।
    अगली आई रे घणी गदराई रे ॥ २ ॥

टेसू न याव रचायो रे केसर सी।
    वा हवा बैण मधु हळद लगै न सरसी ॥
सरसों न चिकसो मस्यो सिंगाऱ्यो दुल्लव।
    संध्या न मंयदी रची न बान्द्या पल्लव ॥
कराड़ी रे अम्बुवा न रीत गायो कोयलड़ी न गीत।
    बजै सयनाई रे ॥ ३ ॥

म्हयकाणी कळी अनार गुलाबी गेंदा।
    म्हउड़ा का मद मंऽ हुया सबै जण अंधा ॥
मद का तळाव मंऽ खिल्यो कमल मदमातो।
    कचनार कळी को नखरो कयो नी जातो ॥

सबको अल्लग अल्लग रंग छिड़्यो रे यो होळी को जँग ।
लड़इ मन भाई रे ॥ ४ ॥

एक कळी सुवासेण बणी कुंज व्रज - धाम की ।
कमलणी - राधिका वाट निहारऽ स्याम की ॥
फुलड़ा सरका गोकुल रा ग्वाला मुसकाया ।
मतवाला भौंरा स्याम जसा तवं हरकाया ॥
रचायो रास चाँदणी रात मनकी मन सी हुई गई वात ।
की जिनगी छाइं रे ॥ ५ ॥

कान्हा की भोळी छुटी चली पिचकारी ।
राधा न बी अपणीं हिम्मत नी हारी ॥
दुइं बाजू थी रंग - रस, की अदला बदली ।
अइं गगन रंग्यो वइं धरा रंगाणी सगळी ॥
उड़यो माटी को अबिर गुलाल पसीना सी आला गद गाल ।
म्हिनत बौराई रे ॥ ६ ॥

धरती को सत

जम रुपी सुरिया नऽ सागर
सत्यवान को प्राण हर्‌यो ।
धरती सावतरी का मन मंऽ
देखो केतरो रोस भर्‌यो ॥

कर्‌यो पछावो बुड़ा - आड़ा
वड़ का आकरसण सी ।
पछो दइ दियो प्राण
कि जम धरती का सत सी खूब डर्‌यो ॥
— ० — ० —

नवी गंगा

–0 गंगा व तरण 0–

धन धन रे म्हारा, धरती का जाया ।
ओ म्हीनत का राया, थारी कसी करां रे ॥
वडइँ म्हारा राम ।

– १ –

किरसाण बेटो तू कोई सी नी हेटो ।
अमर थारी पगड़ी, अमर थारो फेटो ॥
पी न तातो पाणी दे अन माणी माणी ।
थारा बैल गेरऽ थारी, ज्ञान की पिराणी ॥
थारो तप छे रे, सुरिया सी सवायो ।
थारो त्याग राजा, हरिचन्द न नी पायो ॥
नवी गगा तू न सरग सी उतारी ।
म्हीनत का रथ पऽ छे जे की सवारी ॥
धन धन रे किरसाण सपूता ।
ई थारा बल बूता न अम्मर धार ॥
ववई म्हारा राम धन धन रे ....

– २ –

सगर पुत्र सरका आरामी बुरो बोल्या ।
कपिल अन्न देव न डोळा तवँ खोल्या ॥
सुणी गाळी उन्न सराप दियो रे ।
मरो भूक - भुक एतरो वचन कयो रे ॥
आरामी मर्‌या रे सगर पुत्र सरका ।
बुजावऽ कूण उनकी रे भूकऽ न तिरखा ॥
तू न सिव सरकी अगम जटा बांदी ।
पसीना की गंगा क तेम तू न सांदी ॥

बूंद बूंद टपक्यो न लोग जेमण न्हाया ।
 मिट्या पाप सबका पुरबला कमाया ।।
धन कुळ-तारण जग तू न तार्‌यो ।
 दुखी जन क उबार्‌यो भगीरथ सी तू छे ।।
सवई म्हारा राम धन धन रे ....

– ३ –

उनी गंगा न तो गिणती का उद्धार्‌या ।
 थारी गंगा न तो सगळा जीव उबार्‌या ।।
कळिमळ हरणी या गंगा कवाई ।
 थारी गंगा न तो भूक तिरखा मिटाई ।।
ओको सुफल कोई ख नी देखातो ।
 पंडो लिखी ले जेको कोरो मोरो खातो ।।
थारी गंगा को तो सुफल ताजो चाखाँ ।
 मीठो होय ओ तो जे तो गुड़ हम ना खाँ ।।
नव खण्ड पिरथी मं ववऽ थारी गंगा ।
 मेट्या अमीर-गरीब का दंगा ।।
पे सेर गाय एक घाट को पाणी ।
 सबका हिया मं एकी लयर समाणी ।।
धन धन रे थारा तप की ऊ माया ।
 खेत खळा लयराया पापी पेट की भूक ऽ ।।
बुजई म्हारा राम । धन धन रे ....

वरखा - वऊ

आई आई रे वरखा राणी आई रे ।

(१)

राजा सुरिया की राज दुलारी ।
बैण गरमी का हिवड़ा की क्यारी ।
आज इन्दर सीं या परणाई रे ।
रया सासरिया पोइचाई रे ॥
वाजी अगास मं आज सयनाई रे ।
जेमण याव की वात समाई रे ॥

(२)

पाळी - पोसी लाड़कली चली रे ।
बैण गरमी की छात्ती बळी रे ॥
भाई समुन्दर बी हिलकी न मार ऽ
सारो पियर रड़ ऽ रै धुणी धारऽ
बेटी अपणी या हुई गई पराई रे ।
आई आई रे वरखा राणी आई रे ॥

(३)

काळो वाधळी को म्यानू सजायो ।
जेख ऽ पवन उठावण आयो ॥
सजी धजी न हुई या असवार ।
गायो धरती न मेघ मळार ॥
बेटी आंसू टपाटप लाई रे ।
आई आई रे वरखा राणी आई रे ॥

(४)

वाज्या इन्दर का ढ़ोल अई ढ़मा ढ़म ।
वरस्यो मेडळ निरत्यो छमा छम ॥
नाच्यो मोर न दादुर चमकी ।
आव - भगत मं दसै दिसा दमकी ॥
सगळा गगन मं हुई रुसनाई रे ।
आई आई रे वरखा राणी आई रे ॥

(५)

इन्नऽ अणमोल मोती बिखराया ।
जो कि धरती को सिंणगार लाया ॥
जीव मान्तर को ताप मिटायो रे ।
बाप सुरिया को कोप घटायो रे ॥
या सुलखणी वव्वर कवाई रे ।
आई आई रे वरखा राणी आई रे ॥

(६)

पी पी प्यारो पपइयो पुकारऽ ।
गावऽ डेड़र मंगला चारऽ ॥
सारा धापी न जीम्या रे खेतऽ ।
एको टपक्यो सबै पर हेतऽ ॥
इन्न स्वाती की बूँद गिराई रे ।
तिस्स्या चातक की तीस बुझाई रे ॥

(७)

चलो बइल्या सिंगारो रे भैया ।
लाई संदेसो या गोगल गैया ।।
अपणी तीफन न सरता संवारो ।
पयली वावणी को हुयो संवदारो ।।
खेत खेत मं धूम मचाई रे ।
बेटा किरसाण को छे या माई रे ।।

(८)

वाओ वाओ रे किरसाण बीज वाओ रे ।
गाओ गाओ रे खुसी का गीत गाओ रे ।।
माय वरखा नऽ मामू समुन्दर ।
भरऽ अन-धन सी सगळो घर ।।
या रतन धन सागरसी लाई रे ।
हरि हरियाळी आँगणा मं छाई रे ।।

(९)

आयो राखी को मयनू सरावण ।
कसी सासरा की छोड़ऽ या दावण ।।
भाई समुन्दर की याद एवऽ आई रे ।
गंगा-जमुना की राखी पोयचाई रे ।।
बाँदी लीजो तार ई म्हारा भाई रे ।
लाई लाई रे वरखा बैणी लाई रे ।।

धरती को लाल

जागी गयो रे म्हारी धरती को लाल यो ।
चार रात चमक्यो थो चांदी को चन्दो ।
अळसइ मं भरमायो म्हीनत को बन्दो ॥
उगणँऊ मं ऽ सुरियो ऊ दम दम दमक्यो ।
माटी को लाल भाई गम गम गमक्यो ॥
म्हीनत की किरण ढुळी अळसी तिरण बळी ।
चमकी गयो रे म्हारा भारत को भाल यो ॥

२

नद्दी माता को हियो उगलाण्यो ।
बिछड़ेलो बेटो खेत गमकाण्यो ॥
गाय सरकी माय वा भां भां हुमराणी ।
नयर न का थान न सो, वयो दूद - पाणी ॥
कुवा बांद बेसुमार, अमरित की वई धार ॥
पाकी गयो रे म्हारी खेती को माल यो ।

३

सरसत माता घर ऽ घर पुजाई ।
दाजी अरु बेटा नन ऽ सिकस्या पाई ॥
ढ़ोलक - मँजीरा प ऽ राम - राज गाव ऽ ।
हिरदा मं सेवा का बिजड़ा वाव ऽ ॥
गीता को ग्यान सुण्यो प्रौढ़ भण्यो अरु गुण्यो ।
गूँजो गयो रे, म्हारो सूनू चौपाल यो ॥

४

विक्रमादित्य को आयो सिंगासण ।
बत्तीसइ पुतळी को हुई गयो भासण ॥
न्यायीक जाँचग ऽ यो बड़ो मंचरे ।
गाँव गोराड़्या को बठ्यो सरपंच रे ॥
अळगाण्यो नीर - क्षीर पंचायत हुई मोर ।
कोरट कचेरी को मिट्यो जजाल यो ॥

५

मिट्या पाप - ताप आज पुन्न न की छाँवमं ऽ ।
रयो नई भेद भाव रंक अरु राव मं ॥
वर्ण - भेद की गई बा काळी रात रे ।
रई गई मनक्या की एक बड़ी जात रे ॥
हरिजण क मिल्यो खाय सबै हरी दूद-थरी ।
बठ्यो एक जाजम प माटी को लाल यो ॥

६

गळ मिल्या गाँव गांव सड़कन को बांव सो ।
भाग्या रे दूर - दूर सब दुजनाभाव सो ॥
ऊ ओको माल ले न ऊ ओख ऽ माल दे ।
ठाँय बठेला होणख ऽ नवी नवी चाल दे ॥
गोकुळ बण्या रे गाम पैदा हुयो रे स्याम ।
पावळइ बजाव रे सुख की गोपाळ यो ॥
धरती को लाल यो ।

वणजारा की वऊ

ववड़ी या वणजारा की, घमस्याण खणन् खण हुई रे ।
पायल का धमकारा की, ववड़ी या वणजारा की ।।

१

एको काळो काळो रुप, जसी काळी अमोस की रात ।
बिना चांद का तारा सरका, जेवर छे कई भात ।।
मक्की सरका दात नखऽ, कुण कय दाड़िम का दाणा ।
घटी पर का गीत न खऽ, कुण कय कोयळ का गाणा ।।
एकी रागणी जसी थाप इन्दर का नगारा की ववड़ी या वणजारा की ।

२

कुण कय कान का झुमका, एका तारा सरका चमकऽ
हाऊँ तो कऊँ कि काळा खेत मंऽ, रुई को घेटो दमकऽ ।
राखड़ी पर घुमटा का सळ, मखऽ असा देखाय ।
परवत का आजु-बाजू नद्दी नऽ वय्ती जाय ।।
एकी हसी-बतावाँ कसी जसी, म्हैसर की सयसर धारा की
ववड़ी या वणजारा की

३

हाई नी कोमळ हात की, जिनखऽ ववां कमळ की नाळ ।
ऊ तो छे काळा बबूल की, लम्बी दुई डगाल ।।
हत्ती दात को चुड़लो ओखा हात न म वा पेरी ।।
जसी कि नागेण ओदी हुई न, दुई डगाल ऊ घेरी ।
या करऽ लीम की दातुण संजा तक भमसारा सी ।।
ववड़ी या वणजारा की

४

चटकदार बूटी को. एको घेरदार छे घागरो ।
छोड़ऽ साथ कदीनी एकी, सुन्दरता को लागरो ।।
कवच सरीकी चोळी एकी, घणी सुहाणा रंग की ।
दुसमन का बार बचै नऽ जो बाजी जीतऽ जंग की ।।
एकी झाळ भरेली बोली, विच्छू का छमकारा की ।
बवडी या वणजारा की

म्हीनत राणी

छनन् छान् छम् छम्म छमाछम्
म्हीनत - राणी आई रे ।

१

माथा पर को तिलक पसीनू एको अमर - सुहाग रे ।
छर - बंद दुई हळ वक्खर घर लय लय एको बाग रे ।।
घुगर माळ का बैलन गाड़ी को यो चुडलो पेरी रे ।
भुक्खयो - तिस्स्यो राजा एको वन मं करऽ कचेरी रे ।।
जरीदार या हरी फसल की वन्नी पेरी आई रे ।
राजा का मन ख भाई रे, या म्हीनत राणी आई ।

२

बडा वड़ा काटा का भर छे, एकी कोमल सेज रे ।
आसमान सी धोली चादर, वण ख ऽ या लेज रे ।।
नींद तो एकी रात जागणू सुरिया को ऊ तेज रे ।
वड़ा बड़ा नद्दी नाळा बी एको पसीनू लेज रे ।।

सूका राजस्थान म ऽ या पयताल सी पाणी लाई रे ।
तिस्स्या का मन ख भाई रे, या म्हीनत राणी आई रे ।।

३

गेती अरु कुदाळी का एका बिछवा ठमकण लाग्या ।
पाँय न मं ऽ पावड़ा न का ऊ नेउर घमकण लाग्या ।।
जेका भाग सोया था देखो चमकी न ऽ ऊ जाग्या ।
म्हीनत का उ झाव का आग ऽ चांदी वाळा माग्या ।।
सुस्ती का इना आड़ा माच पर खड़ो नाच या लाईरे ।
किरसाण का मन ख ऽ भाई रे, या म्हीनत राणी आईरे ।।

४

या नाचो तो गाँव गाँव मं ऽ मोटर नाचण लागी ।
या नाची नद्दी नाळा को रस्तो पलटण लागी ।।
या नाची तो सुता खेत की जिनगी जागण लागी ।
या नाची भुक्क्या बन्नम की भूक बी भागण लागी ।।
या नाची पूंजी अरु श्रम का हिवड़ा सिवण लागी ।
या नाची सबका जिवड़ा की कोयल कूकण लागी ।।
एका नाच मं आसमान सी धोळी खादी आई रे ।।
चन्दा न जेख ऽ बुणई रे, या वड़ो न लप - झपआई रे ।
दुनिया का मन ख भाई रे या म्हीनत राणी आई रे ।

संदेशो

जिनगी को अंत आयो
कि सखी ! वसंत आयो ।
तन की सारंगी पर मन को राग छेड़ न
एक घडी बी नी म्हारो कंत आयो
जिनगी को अंत आयो ।

१

अम्बुआ बी पाक्या न लिम्बुवा बी पाक्या ।
कोयल न मोठा मोठा चाखणा चाख्या ॥
जलम की दुक्खेण आँसू व वऊ हाऊँ ।
क्यों नी आज तलक - म्हारो सांवरियो आयो ॥
जिनगी को अंत आयो ।

२

चन्दा तू लइ जा रे सन्देसो म्हारो ।
मखऽ नी सुवाय आज चांदणियो थारो ॥
पिवड़ा सी कयजे थारा हिवड़ा की राणी का ।
हिंगूळ्या होट न प पेळो पण छायो ॥
जिनगी को अंत आयो ।

३

सूकई न भाल हुई म्हारी या काया ।
अवी बो जिवाड़ मख थारी वा माया ॥
तरवरा उठऽ रे म्हारा सारा तन बदन मंऽ ।
याद नऽ हियामं म्हारा सैवर उलटायो ॥
जिनगी को अंत आयो ।

आँसूड़ा लैजा म्हारा ओ मैया रेवा ।
जिनगी भर करुं थारी खूब खूब सेवा ॥
झवर न सी चरण न प उनका पोइचावजे ।
दीजे म्हारो पुन्न उनख सगळो कमायो ॥
जिनगी को अन्त आयो ।

५

जिवऽ म्हारो सावरियो वरसऽ हजारो ।
हवा तू सुणी ल एक अरदास म्हारी ॥
हाऊँ मरुं तो आँसूड़ो उनको बी लावजे ।
जिवणऽ को सार म्हारो जेमण समायो ।
जिनगी को अन्त आयो ।

वीरपस

वीरपस आई मख ऽ हेर थारी आई ।
तू न केऊं रे भुलाई वीरा हो ! वीरा हो !!

१

आज खुसी छे म्हारी नानी दे राणी ।
ओका वीरा न वीरा वीरपस आणी ॥
कुढ़्यो कलप्यो मन म्हारो, खाली छे खोळो ।
भाबी नऽ लियो काई थारा सो अबोलो ॥
घऊं की समई म्हारा लेणऽ नी हाई ।
म्हारा पियरऽ मं काई खाली पांच पस भाई ॥
वीरा हो ! वीरा हो !!

२

थारा बिना कसी हाऊं घोटूँ से घुटको ।
स्यामी क म्हारा बताऊँ कसी लटको ।।
तू नी आयो तो लग्यो उनखऽ बी झटको ।
तोड़्यो नी उन्न बी अन्न को कटको ।।
गमो आज छाई तू न देर लगाई ।
तू खऽ हेर नी आई म्हारा माड़ी जाया भाई ।।
वीरा हो ! वीरा हो !!

३

थारा दोस गया होयगऽ वीरपस लई नऽ ।
उनख बधावती होयग म्हारी सारी सई नऽ ।।
रस्तो देखूं रे हाऊं बी उबी सामी वाटऽ ।
आज बिछायो मनऽ पलकां रो पाटऽ ।।
हिया मं समई, हूक उठी उठी आई ।
म्हारी छाती उगलाई, डुचकी एक नी आई ।।
वीरा हो ! वीरो हो !!

४

रुंजो आज छायो वीरा ! मन म्हारो कळपऽ ।
तू खऽ देख्या बिन म्हारो, तन सारो तळपऽ ।।
काळ सी जवणू रे, डोळो म्हारो फड़कऽ ।
विपत मंऽ वीरो म्हारो, छाती म्हारी धड़कऽ ।।
भीड़ कैं की आई थारा उप्पर भाई ।
तू न देर लगाई ।।
वीरा हो ! वीरा हो !!

भीड़ दूर हुई जाय, वीरो म्हारो आवऽ ।
आज छे दितवार, वीरपस लावऽ ।।
पांच नायळ की हाऊँ पाळ भरुंगा ।
पाँचो पकवान की थाल धरुंगा ।।
सुखी भाबी भाई देखूँ ओ रेवा माई ।
करुं थारी सेवकाई रेवा हो ! रेवा हो ।।

६

आई जा रे आई जा, म्हारा भोळा - भाळा वीरा ।
भोळी - भाळी भाबी की मुंदड़ी का हीरा ।।
संजवी न आरतो हाऊं तू ख ऽ वधाऊं रे ।
चौड़ा कपाळ पर कंकू लगाऊं रे ।।
वाजी गाड़ी आई, मख ऽ डुचकी बी आई ।
हेर वीराजी क आई म्हारी भाबी बी आई ।।
साथ वीराजी क लाई, म्हारी वीरपस आई ।
वीरा हो ! वीरा हो !!

७

नानू बोल्यो मामी न मामाजी आया ।
खाण ऽ सारु मीठा-मीठा खाणा बी लाया ।।
मन ऽ बी तो चारइ पदारत पाया ।
सूज ऽ नी मख ऽ म्हारा डोळा डबराया ।।
रांद भाबी गुड़, घिव - भात, लाड़ू लापसी ।
दूर आज वीरो म्हारो सब संताप सी ।।
दूणी होय कमाई, जीव जुग जुग भाई ।
फूळ फळ रे भोजाई, हाउं यो असीस लाई ।:
म्हारा माड़ी जाया भाई, वीरा हो ! वीरा हो !!

धरती को सत

जम रुपी सुरिया न ऽ सागर सत्यवान को प्राण हर्‌यो ।
धरती - सावतरी का मन मं ऽ देखो केतरो रोस भर्‌यो ।।
कर्‌यो पछावो बूढ़ा – आड़ा, वड़ का आकरसण सी ।
पछी दइ दियो प्राण, कि जम धरती सत सी खूब डर्‌यो ।।

वरखा

आई आई रे बुंदडी आई रे, रस लाई रे बुंदडी लाई रे ।
म्हारो हरी भरी धरती को
लाई लाई रे चुंदड़ी लाई रे, हरी लाई रे चुंदड़ी लाई रे ॥

१

चली व्हाल रे खमसो खाईनऽ भरयो नभ काळा बादल लाईनऽ ।
रात अंधारी हात नी सूजऽ गांव गांव अरु वनखण्ड धूजऽ ॥
पी पी प्यारा पपइया को जागी, बठी सपता न रामधुन लागी ।
वाजी ढोलक, ढप न मजीरा, गांव गांव गावऽ तुलसी कबीरा ॥
सब न इन्दर देव मनाया, ऊ बी पिरथी पऽ उतरी न आया ।
हयौ धुख दिसा वा गाजो, असमान मं नौबत वाजी ॥
वा इन्द्र देव का सारु, बिजली की मुन्दड़ी लाई रे ।
आई आई रे बुन्दडी रे ॥

२

बोली डेडर लाई रे संदेसो, अवं वरखा को रयो नी अंदेसो ।
भरमोक पाणी वरसण लाग्यो, अवँ सूखा को डर भाई भाग्यो ॥
आई लाल-लाल गोगल गाई, सब न हिळी-मिळी खेती कऽ वाई ।
खेत न को हुयौ नवो पेरवासऽ तिस्स्या चातक की बंदी गई आसऽ ॥
सुखी किरसाण मस्ती मं नाच्चो, अपणू तकदीर खेतन मं वाच्यो ।
अमरित की बरसी रे धार, गावऽ सब मेघ मळार ॥
गम पध गम पध नीसा की, लाई लाईरे धुंदड़ी लाई रे ।
आई आई रे बुन्दड़ी आई रे ॥

स्वयंवर

दादाजी म्हारा उन संग हाऊँ परणाऊं,
रोम ऽ समइ जेका देस को हलचल ।
मेट ऽ जो देस प ऽ जिनगी का पल पल,
जननी की रक्षया मं दादा म्हारो दुल्लव ।।
अटल हिमांचलसो पाऊँ म्हारा दादाजी.... ।।१।।

तन मन धन सारो देस ऽ प ऽ वार ऽ,
जस गाव ओका गंगा रेवा की धार ऽ ।
दुनिया मं ऽ जीत की धजा लयराव ।।
ओको हाऊँ नार कवाऊं म्हारा दादाजी .... ।। २ ।।

रण मंऽ जो बिजली सो कड़कड़ वड़कऽ ।
दुसमन ख देखी न पळळय सो भड़क ऽ ।।
देस पऽ प्राण को भेट चढ़ाव ऽ ।
तो हँसी हँसी कंकू मिटाऊं म्हारा दादाजी.... ।। ३ ।।

दुसमन सी पूरो पूरो बदलो जो लै ले ।
माथा प ऽ जीत को सेरो बंदैले ।।
देस का उना लाल की हाऊँ चरण - रज ।
माथा प अपणा लगाऊं म्हारा दादाजी .... ।। ४ ।।

रचो रचो दादाजी म्हारो स्वयंवर ।
जेम एतरा गुण होय ऊ म्हारो रायवर ।।
नी तो म्हारो एतरो परण ध्यान धरजो ।
जिनगी कुवारी बिताऊं म्हारा दादाजी .... ।। ५ ।।

विरदूली

आई रे आई विरदूली आई . . .

कंकू उछालती चौक ऽ पुरावती, आई रे आई विरदूली आई ।

(१)

स्यामी संगात हाऊं वीरा घर जाऊंगा ।

नाचूँगा - गाऊंगा मस्ती मनाऊंगा ।।

सलमा – सितारा की चूंदड़ चमकावती ।

बेन्या बाई का पांय का झांझर घमकावती ।। आई रे आई . .

(२)

पूजी न खड़माटो वीरा घर जाऊंगा ।

हरिया जवारा को आनन्द उगाऊंगा ।।

माय अरु दादा की ममता दुलारती ।

ढोल पर खुसी को ऊडंको बजावती ।। आई रे आई . . .

(३)

बांकी सी झांकी गणेश की संवारती ।

हिवड़ा का दिवड़ा की आरती उतारती ।।

मनड़ा का मोदक की परसादी बाटती । आई रे आई . . .

(४)

आंगणा मं वीरा म्हां वाजी सयनाई ।

लछमी न विष्णु की आज सगाई ।।

नवली गिरस्ती का पगल्या संवारती । आई रे आई . . .

(५)

साजूंगा वीराजी की जिनगी की डेळी ।

पूजूंगा वीराजी की वंस की बेळी ।।

मांडवा मं सुख की सुवासेण नचावती । आई रे आई . . .

(६)

अम्बुवा न जामुण को मांडा प पाती ।

वर - कन्या पर जो चवर डुलाती ।

माड़ूली ख मामा की चूंदड़ वड़ावती । आई रे आई . . .

(७)

गावती बियाणा न पर बाती गावती ।
संजा क ऽ सांजूली गीत सरसावती ॥
निवाळी का गीत सी जन-मन लुभावती । आई रे आई ...

(८)

वीरो म्हारो लावग ऽ चन्दा सी बंदड़ी ।
तारा टकेल जेकी चमकग चुंदड़ी ॥
अणजाण्या साथी सी पल्लव बंदावतो । आई रे आई ...

(९)

जबं तक चांद अरु सुरियो यो चमक ऽ ।
अक्खय अमर यो जोड़ो बी दमक ऽ ॥
बेन्या की आसीस गावती बजावती । आई रे आई ...

(१०)

एक चाँक सी बैल – गाड़ी नी चलती ।
हवा बंद होय तो पत्तो नी हलती ॥
बीरा जी की रोटी को सोय वा लगावती ।
बीरा जी का डोला की नींद वा भगावती ॥
आई रे आई ...

आजादी

उड़ी आजादी की म्हयकाण, दुनिया झूमण लगी ।
आई जवानी न छायो गुमान दुनिया झूमण लगी ॥
पांय एका चूमण लगी ।

(१)

बापू न थिगल्या भरनू सिकाड्यो, नेहरु न पगल्या धरनू सिकाड्यो ।
लगी मीठी - मीठी तोतरी जबान, एकी बोली मं आई रे रसाण ॥
दुनिया झूमण लगी ।

(२)

परिवन हुई या भणी गुणी न। ललचाया घणा एकी कीरती सुणी न।
एका रुप मं आई रे सवाण । दुनिया झूमण लगी ॥

(३)

चंबल न चूंदड़ एकी टकई रे। रेवा न गोटा किनारी लगई रे ॥
भाकरा नांगल न माला पेरइ रे। एका गयणा छे बांध न बधाण।
दुनिया झूमण लगी ।

(४)

माय अरु बाप को सायो रयोनी । कोई ख ऽ इन्न ऽ अपणू दुखड़ो कयोनी ।
करऽ कूण एको भाई कन्या दान । दुनिया झूमण लगी ॥

(५)

आँगणा मं ऊब्यो रे सुख को दुल्लव । बाँदऽ रे कूण एका रस भींजा पल्लव ।
चाचा नेहरु का दुखै गया प्राण । दुनिया झूमण लगी ।

(६)

दुख रुपी सिसुपाल की छे चड़ै रे । आजादी - रुखमा का याव की लड़ै रे ॥
करो सुख का कन्हैया को मान । दुनिया झूमण लगी ॥

(७)

चाचा जवाहर को एक थो संदेसो । मेटो रे मेटो लड़इ को अंदेशो ॥
कोई हूजो मत लोई न लुवाण । दुनिया झूमण लगी ॥

(८)

अक्खय अमर रय हमारो तिरंगो । भूकऽ मरी जाय दुख भिक मंगो ॥
वाजऽ चैन की वा मिरधिंग न झान । दुनिया झूमण लगी ॥

रितु आई रे

रितु आई रे वसंती अलबेली । रितु आई रे ।
काळी कोयली न कुहुक मचाई रे । रितु आई रे ॥

(१)

खिर्‌या पिपळा का पात पुराणा हो । झर्‌या पर हित सगळा स्याणा हो ॥
मिट्यो भाव ऊ अपणा विराणा को । भाग्यो फूट रो भूत सिराणा को ॥
नवी जिनगी की बाग लयराई रे । नवी कोपळो मं नवो रस लाई रे ॥
रितु आई रे ।

(२)

हुयो काया कलप बगीचा को । जन मन का लाल गलीचा को ॥
वा एक समस्या सुलझी रे । जो अबी अबी थी उलझी रे ॥
सिरी नँदन की मुसकाई रे । टेसू केसर की प्रेम - सगाई रे ॥

(३)

काटा - काटा प आज गुलाब हस्यो । जसो देस को चमक्यो खून - पस्यो ॥
पत्ती - पत्ती मं आज समाण्यो रस । सारी बाग की फड़की रे नस - नस ॥
झाड़ - झाड़ जवानी छाई रे, म्हारी आजादी की अमराई रे ॥

(४)

नई रयो उदय कोई को बाकी । म्हारा देस की या अनुपम झाँकी ॥
हिमवान को हिवड़ो गळ्यो गळ्यो । सुख की गंगा का गळऽ मिळ्यो ॥
नवी पत्ती असोक मं आई रे ।

(५)

उड़ी रंग - बिरंगी तितली नऽ नाची नयन - नयन की पुतली नऽ
दियो हरो रंग ई बगिया नऽ धोळो मान सरोवर दुधिया नऽ
केसर केसरियो लई आई । म्हारी धजा तिरंगी लई आई ॥
जो मस्त गगन मं छाई रे । देस - देस सुगंध फैलाई रे ॥

(६)

फूल्यो झाड़ बबूल कटीलो रे । सच्चई को जसो वसीलो रे ॥
आजादी की अमली गदराणी । बरबस मूँडऽ आवऽ पाणी ॥
गळी - गळी कली मुसकाई रे । भवरा - भवरा न धूम मचाई रे ॥

छायो काम देस को भक्ती को ।
जेको वार - पार नी शक्ती को ॥
बिन - देह को ताकत छाई रे ।
रितु आई रे ॥

रसीलो फागुण

म्हारा तन पर करतो घात, करुं काई वात ।
हटीलो फागुण यो, रसीलो फागुण यो ॥

(१)

कि तन मन डावां डोल होय काई सोच ऽ ।
इनी उठा - पटक मं ऽ मन ख ऽ आई गई मोच ऽ ॥
पिपळा का चिकणा पात सरीका दिन ई ।
काई केऊं गचकाव म्हारा सरी मं ऽ गिनई ॥
ध्रुव बी चंचल हुई जाय न निकळ ऽ हाय कटीलो फागुण यो ।

(२)

उनी अमरइ की म्हउराण मं म्हारो मन अटक्यो ।
अरु कोयळ को कुहुकाण मं जाई न भटक्यो ॥
नारंगी न बी अपणू पल्लव झटक्यो ।
लिम्बुवा क यो संकेत जरा सो खटक्यो ॥
कई दै नी दे यो मात वजीरी घात कटीलो फागुण यो ।

(३)

म्हऊ गळ्या कि मद की नद्दी न इतराणी ।
ल्यो सरस फाग की मस्ती न भंग छाणी ॥
गेन्दा गुलाब प नस्यो सवायो छायो ।
सरसों न अपणू पेळोपण वरसायो ॥
पुराया मन न मन प हात कळी-भौरा की हुई संगात ।
नसोलो फागुण यो ..

(४)

केसूड़ी न जंगल मं ऽ निवतो फेर्यो ।
रंग रुप का लोभी न ऽ बस तिरछो हेर्यो ॥
तोड़्या रंगीला फूल मसी न फेक्या ।
मन ऽ असा - असा बी भला भाई होण देख्या ॥
उन्न रंग्या ओका दुई हात लुटई दो जिनगी की सौगात ।
कटीलो फागुण यो .

(५)

जंगल जंगल अरु गांव - गांव बौराया ।
जड़ चेतन सब मं कामदेव मुसकाया ॥
जई देखो वई रंग - रस की मसका - मसकी ।
तन तो तन मन पर थो थर रंग अरु रस की ॥
कि सबको सबका उप्पर रंग कि आलो थो धरती को अंग ।
रंगीलो फागुण यो . .

चांदणियो

चांदणियो चम चमायो अमरित की धार लायो ।
मन की सारंगी का कोना को एक तार
झनन् झनन् बाज्यो न झन झनायो ।

(१)

उतरी गगन सी चांदीं की भूकी, जतर-कतर बगळी वा रस्तो बी चूकी ।
खेत खळा अगल - बगल परवत पर झाड़ झाड़ ।
जन-जन का मन को फेरो लगायो ।

(२)

मस्तो वरसती रस की फुस्यार रे ।
वैरागी मन पर पड़ी गइ तुस्यार रे ॥
रागी का द्वार खुल्या, वीणा का तार मिल्या ।
प्यार की पुकार मं समैयो समायो चांदणियो चम चमायो ॥

(३)

उड़ती सरग सो धरती प ऽ आई ।
परी आसमान को म्हारा मन भाई ॥
बठ्यो हाऊं छत प वा बाजू मं आई ।
सवकन साल म्हारा घर मं लगायो, चांदणियो चम चमायो।

(४)

मस्ती गजब की चुस्ती अजब की ।
मेट ऽ कविता का बोल सुस्ती रे सबकी ।
अमरित मं नरबदा का न्हायो सुधाकर ।
सरग आज उतरी न धरती प आयो चांदणियो चम चमायो।

वावणी

अन अरपण कर दियो खेत मं ऽ लुटी गयो किरसाण खेत का हेत मं ऽ
तोफन का ऊ तीन हात सो पंगत उन्न परसी दी ।
आसा जोमण बठो पाटल ऽ गई फसल की बरसी थी ॥
जूठण - खर पतवार समेट ऽ हात न सीं ऊ किरसाण्यो ।
हिरदा मं खुस होय फसल क ऽ देखी न अगलो वाण्यो ॥
आसन धोव ऽ बैल्या प्यारा लगै कोळपा को साबुन ।
म्होनत नाचण लगी खेत मं, घुगरा की पायळ रुण - झुण ॥
फळ पाव ऽ ग पियो जिन थो तातो पाणी चैत मं ।
अन अरपण कर दियो खेत मं ॥
म्हयर म्हयर मक्की माता ल्यौ पवन - झूलणा मं झूली ।
मूंग न चवळा का संगात मुंगफळी भली फूली - फूली ॥
साळ सलोणी न पेरी डंठल का कर मं चूड़ी न ऽ ।
कान न मं देखो कपास का लटकी सुन्दर पूड़ी न ऽ ॥

ल्हयर ल्हयर माता जुवार का पत्ता छुव ऽ अगास ख ऽ ।
स्यावासो बाजरो दई रयो बरखा का चोमास ख ऽ ।।
गोफण अरु मांडवो होणू हो-र्या न की डकैत मं ।
अन अरपण कर दियो खेत मं ।।
म्हीनत को फल रखवाली छे खेत खेत देखाज जो ।
अळसी को फळ कंगाळी छे अळस खोर क खाज जो ।
तेज घाम म हळ गेरी न ऽ माटी खूब कमै इन्न ऽ ।
खाद भर्यो वखरी – वखरी न करी खूब नरमइ इन्न ऽ ।।
नवा खाद नवा – नवा बीज अरु नवो ढंग खेती को छे ।।
म्हीनत सी जो करो काम तो ऊज मोल रेती को छे ।
अपणा तोस ऽ अरु भरोस ऽ अन पैदा होय रेत म ।।
अन अरपण कर दियो खेत मं ।

–०×०–

चाँद अरु धरती

अपणू घर मत छोड़ सांवरा, अपणू घर मत छोड़ ।
आदो क छोड़ न बावरा, ओखी पर मत दोड़ रे ।।

(१)

व्हां काई जाज यहांज लै आ तू चांद चांद गगाज क्यों ?
ओ पैसा वाळा गरीब को फोकट माथो खाज क्यों ?
ऊज जाई सकज जेका पास धन अरबों - खरबों होय रे ।
ऊ काई जाय कि जेका पास है मम्मम को नी सोय रे ।।
छोड़ बावरा सनक बुरी या टेम बिगाड़ ऽ मत थारो ।
बजा बजा रे बजा धरा पर म्हीनत को ऊ नंगारो !।
जेत्ता चांद चायजे तू ख ऽ वत्ता बाद बणैल रे ।
नयर – नयर की लयर - लयर पर सौ - सौ चांद बुलैल रे ।।
पैसा क बरबाद कर ऽ मत खेत-खेत लै जा पाणी ।
उतरी आवग ऽ चन्दो बी साथ चांदणी महाराणी ।।
व्हां काई छे खाली भाटा क्यों फोड़ज माथो थारो रे ।
एक इन्च बी झाड़ उग ऽ हाई नी एत्तो बी गारो रे ।।
मान्यो हमन ऽ जनसंख्या की भीड़ बडी रई धरती पर ।

जोर पोसण ऽ को कद्दी नी घटतो पण ई पिरथी पर ॥
समइ होय नी एत्ता मं तो बंजड़ धरती तोड़ रे ।
अपणू घर मत छोड़ भाइरा अपणू . . .

(२)

थो अमरित पयळ ऽ चन्दा मं पी गइ या धरती राणी ।
पीत ऽ पीत ऽ बचो गयो तो नद्दी - नद्दी उगलाणी ॥
ई उफाण क रोक बणा तू बांद फसल क पाई द ऽ ।
मन का लड्डू चांद का थारा उनक ऽ य्हांज उगइ द ऽ ॥
या धरती थारो सरग बण ऽ तू एको इन्दर राजा रे ।
एका पछेड़ी उन्नति का छे थारा वाजा - गाजा रे ॥
मत चन्दराय तरक्की पर तू धन क ऽ मती ववाड रे ।
नकल - नकल मं मिट्यो बचेली असलक मती गंवाड़ रे ॥
कोई भंग पे तो नस्यो तु ख ऽ क्यों आव ऽ म्हारा भैया रे ।
तबला कोई वजाड़ ऽ तो तू नाच ऽ ताता थैया रे ॥
हात को काम करी ल ऽ पूरो सोच फिरी दूजा की तू ।
पेट पूज पयल ऽ अपणू फिरी सोच देवपूजा को तू ।
थारा लायक या धरती छे तू धरती का लायक छे ।
थारा गीत धरा या गाव ऽ तू धरती को गायक छे ॥
य्हांज करी ल ऽ पड़्या सींगड़ा सर को अपणू गोड़ रे ।
अपणू घर मत छोड़ भाई रा अपणू घर . .

(३)

धरती सबसो बड़ी कि सबको बीज सम्हाल ऽ या भारी ।
हां पण पाप बढ़्या को समजो, सुद बुद भूल ऽ या सारी ॥
मनु को बीज सुरक्षित य्हाँ छे झेल प्रलय का तू झोका ।
एकमात्र ग्रह या धरती छे बाकी का सारा धोका ॥
कर निर्माण हजार हात सी फेर तरक्की की माला ।
आवग ऽ दौड़ता य्हांज सब चांद शुक्र मंगल वाळा ॥
जो पयल ऽ पौयच ऽ चंदाप ऽ ऊ क्यो बड़ो कवाय रे ।
यो तो फितुर मनुस की अक्कल को पागल पण आय रे ॥

बण मत असो बडो खजूर तू छाया पंथी नी पाव ऽ ।
अम्बो बण धरती को बेटो सब कोई थारा फल पाव ऽ ॥
तू निरभर छे पांच तत्त पर ऊ सबका सब य्हांज छ ।
इना मामला मं चन्दा की जगा सड़ेली सांज छे ॥
थारो तन मन थारो जीवन ई धरती सौ लिपटाण्यो ।
मिट ऽ बीज थारो रंच भरो बी एकासो जो विलगाण्यो ॥
अरे अपोलो का विचार मं लाई द ऽ लाई द ऽ मोड़ रे ।
अपणू घर मत छोड़ भाइ रा अपणू घर ...

पग पग रे चलो

पग-पग रे चलो तम सब सी मिलो पग-पग रे ।

(१)

गांधी बाबा को संदेशो घर घर मं ऽ पोयचावां
ओख ऽ हम दुनिया भर मं ऽ ओका ग्यारा वरत हम पाळां रे ।
सत की हांडी क आओ उजाळां रे ॥
जग मग रे जळो जोत-जोत मं ढ़ळो जग-मग रे ।

(२)

हम बिगुल प्रेम को फूंका रे, अरु घृणा प सब मिलि थूंकां रे ।
दया जीव जीव को पयचाणो, तम गरब की चड्डी मत ताणो ॥
दुख दरद सुणो सबका हितेसी बणो पग-पग रे ।

(२)

वाटी-वाटी न खाओ जेतरो आव ऽ, या माटी तमारो जस गाव ऽ ।
धन गाड़ी न मत धनवान बणो, तम मनुस अरे इनसान बणो ॥
अपणा खीचा मत भरो कोई ख रोता मत करो पग-पग रे ।

(४)

पाई सकती निबल की मदद करो, सबक ऽ साथ मं लड़न भवसागर तरो ।
कोई कोरो मति मेर ऽ लड्डू टालो, भूल्या-भटक्या न की अक्कल वालो ॥

कोई प चडइ मत करो माथा पडइ मत करो पग पग रे ।

(५)

सीख सदाचार की सीको रे, माथा संयम नियम को टीको रे ।
बचो असत असंयम सी भाई, मुसकिल सी या जिनगी पाई ॥
डग मग मति हो ध्रुव का सत सी डग मग रे ।

तीजो दीजो वॉजूली कऽ

एक दियो न अरु दूजो बी दीजो, तीजो मती दीजो भगवान !
तीजो दीजो वॉजूली कऽ ।

(१)

पयलो वधावो सुरिजमल सरको, दूजो चमकतो चन्दो ऊ घर को ।
तीजा की टिम टिम जोत, पोयचाओ संजा सांजुली कऽ ॥

(२)

म्हारी उमर की म्हारी सएली, चौथी जलवाय ओकी बणी हो पहेली ।
निचवी न घरी दी वी जान, रंग भूल्यो मँयदूली कऽ ॥

(३)

वडो परिवार वको पड रे फजीती, रोज भरऽ पण सदा रीती की रीती ।
सुख की नी लगी रे हवाण, चड़ी दुख की वा सूली पऽ ॥

(४)

एक होय तो कय ओखऽ कुवर कन्हैयो, बैण बी कय ओखऽ प्यारो म्हारो भैयो ॥
दस मं तो खोलऽ नी जबान रसीली रसना भूली कऽ ।

(५)

कपड़ा न लत्ता नी पुरऽ ओखऽ पूरा, काम रई जाय ओका सारा अधूरा ।
भुक्कयाज सोत वका ज्वान, नींद कसी माडूली कऽ ।

(६)

घणी सन्तान की बडी बडी माया, सूकइ न भाल हुई रे वकी काया ।
पोसऽ कसी सवकऽ सन्तान, रयोनी तेल वातूली मंऽ ॥

आयो रे मयनू कुवार

आयो रे मयनू कुवार । वारिक पड़ी गई फुवार ॥

(१)

म्हयक्यो रे खेत को कोनू, मोती भर्‌यो जसो दोनू ।
पाक ऽ ग भर पल्लव सोनू, धाप ऽ ग गाय को गोनू ।
मनख्या मनाव तिवार, आयो रे मयनू कुवार ।

(२)

चमक्यो रे चांदी को चन्दो, धरती प यो धौळो रंदो ।
सबक ऽ मिल्यो प्यारो धन्दो, तिस्स्यो नी स्वाती को बन्दो ।
हरियाळी छे बेशुमार, आयो रे मयनू कुवार ।

(३)

करजा की करी न वसूली, सिणगार सी संजा फूली ।
ऊषा दिसा अपणो भूली, भूल क ऽ अपणी कबूली ।
पच्छम म छायो खुमार, संजा कुवारी को प्यार ।

(४)

ठण्डी रे सुरिया की तापणी, हळकी रे शीत की कापणी ।
गड़वाट की गई नी हापणी, पगडंडी पडी जसी सापणी ।
हेम की हळकी फुस्यार, आयो रे मयनू कुवार ।

(५)

सेंगळी न पूंजी छिपाई, जो छे अमीर की जाई ।
अई या गरीबी गुराई, ज्वानी जुवार मं आई ॥
मक्का न मस्ती मचाई, उडद्‌या न पंगत जमाई ।
मूंग न न खोली दी थैला, चवळा न बी बाजी लैली ॥
आया गरीबन का दुवार, आयो रे मयनू कुवार ।

हड़पो

स्वारथ हड़पो न वाटो परमारथ, भुई माता हड़पी नी जाय ।

(१)

बडा बडा लोग नन एक ऽ हड़पी थी, तवं या घेरइ नन घणी तडपी थी ।
मरी गया भरत न मिट्या मानधाता, पण या संगात नी जाय ।।
भुई माता हड़पी नी जाय ।

(२)

हडपन की आदत पडी होय थारी, मानील-मानील वात या म्हारी ।
छौ दुसमन थारा पाछ ऽ पड्यारे, ई क्यों नी हड़प्या जाय ।।
भुई माता हड़पी नी जाय ।

(३)

काम करोध न मोह हडप रे, मद मतसर अरु लोभ झडप रे ।
सच्ची मं इनसान तवं तू बण ऽ ग, भलावाना थारा हुई जाय ।।
भुई माता हड़पी नी जाय ।

(४)

कोई बी काम करनू तो धरनू नी देणू परेम सी वात करी न लइ लेणू ।।
सीदा सादा रस्ता प चल म्हारा बीरा दुनिया को भलो हुई जाय ।।
भुई माता हड़पी नी जाय ।

(५)

तोड़ - फोड़ करनू या नीतो नी थारी, गच्चा मं पडी जाय अमन हमारी ।
जीव तू बी जीवण द ऽ दुसरा मनुस ख, सुख की लयर लयराय ।।
भुई माता हड़पी नीं जाय ।

(६)

थारी पन्ना एका पांथ मं नो कदी आई, तो समजील देस को बढती घटाई ।
विरोध कीं आग लगो रे सारा देस मं, भलो होयग ऽ जवं ऽ या बुजाय ।।
भुई माता हड़पी नी जाय ।

मक्का

घूम घटा घूम घटा छाई गई रे, भदो मं कादो मचाई गई रे ।। घटा छाई गई रे ।

(१)

मक्की मं पड़्या अवँ, नान्नाना दाणा ।
कई का कमजोर अरु, कई का छे स्याणा ।।
पोसाण्या ऊज जिन्न, खाद धणू पायो ।
मोकळी जगा को जिन्न, फायदो उठायो ।।
दूर वावण ऽ को जेख ऽ, चस्को लग्यो रे ।
सोयेलो भाग वको, समजो जग्यो रे ।।
साकड़ी गळी मं जसो, आदमी निरोग नी ।
पास उंग्या पौधा क ऽ, बढ़ण ऽ को योग नी ।।
गोट्या सी सारी सफाई हुई रे । नींदणी मजूरी बचाई गई रे ।।

(२)

छूम घटा छूम छटा छाई गई रे । सांज्या फूली मन ख भाई गई रे ।।
एलड्रीन छाटी जिन, फसल पूरी काटो ।
अळग ऽ अळग ऽ चडयो, ऊज करजा की घाटी ।।
डेड़ वीघा मं पंदरा, कुंटल को कोटो ।
कोई ख नी हो तो एम ऽ, रच भरी टोटो ।।
यूरिया को उरबरक, जिन्न - जिन्न नाख्यो ।
भारी फसल को मजो, उन्न - उन्न चाख्यो ।।
दिन ऽ काम रात जागरण, खेत - खेत मं ऽ ।
सोन्न पाक ऽ ग, ओकी माटी या रेत मं ऽ ।।
सरगम 'होरया हो' की छाई गई रे । माळ्या प ऽ नौबहार आई गई रे ।।

(३)

घूम घटा घूम घटा छाई गई रे । असकळा बिमारी मचाई गई रे ।।
बाळक क ऽ होज, जसी खासी न सर्दी ।।
इस्टीम बोरर की एप ऽ, आव ऽ घणी गर्दी ।।
ग्रास होपर वी विल, की चढ़ै एप होय रे ।
एलड्रीन न वी एच सी, कर ऽ वको सोय रे ।।
जिन्न ऽ पइचाणी एको, एतरी बिमारी ।

समजो वकी हुई गई पो बारा भारी ॥

नीरोगी काया को, नीरोगो फळ रे ।

'भूख मरी' को समजो, छटी गयो बळ रे ॥

कड़की प गुर गुर गर्राइ रई रे । पुरजोर मक्का या आई गई रे ॥

(४)

लूम लटा लूम लटा छाई गई रे । 'मकइ - कुवर' की लगी सगाई हुई रे ॥

मोती जसा दाणा, उपमान बण्या दात का ।

कोई नी बराबरी कर, भुट्टा सवा हात का ॥

बाल सुनेरी छे, यो खेती का जायो ।

चँवर डुल ऽ राजकुंवर । सबका मन भायो ॥

नीमाड़ी खेती को, हीरो यो भुट्टो ।

भूक की कसौटी प ऽ, खरो म्हारो पट्ठो ॥

हवा चल ऽ असो लग ऽ, नींद मं यो जपतो ।

एक पाँय पर यो, पर खातिर तपतो ॥

घाम पड़यो मक्की अकराईगई रे । आतमा मनुस की पोसाई गई रे ॥

मक्का आई गई रे । मन ख भाई गई रे ॥

रेवा मैया रेवा ओ

रेवा मैया रेवा ओ, थारी कराँ हम सेवा ओ ।

अन धन भरपूर कर न, दै द ऽ मीठा मेवा ओ ॥

(१)

कळ - कळ - कळ - कळ तो, जळ निरमळ न पावन ।

टळ मळ टळ मळतो, जळ लोभाण्यो जन - मन ॥

गयर अरु गम्भीर, हियो छे अथाय ओ ।

लाख - लाख लोग न को, एक तूज माय ओ ॥

चाँद अरु सूरज को, थारो छे उम्मर ।

चाल म नी आयो, थारी रंच भरी झम्मर ॥

तू अमरित की देवा ओ, भर भर खोचा पेवाँ ओ । अन धन ....

(२)

चक्रवर्ती मानधाता, सेवक था थारा ।
रोज पूजता था थारा, ऊ दुई किनारा ॥
अल्या माता बी थारी, थी एक बेटी ।
उन्न बी करी थारी, देवी खूब चेटी ॥
कौरव न पाण्डव बी, थारा पास आया ।
जगा - जगा सिव-लिंग, जिन्न ऽ थपाया ॥
अच्छा काम का हेवा ओ, सीख असी हम लेवा ओ । अन धन....

(३)

सुरियो बी दिनभर, डुबकी लगाव ऽ ।
जागी न ऊ सब क ऽ, सबक सिकाव ऽ ॥
प्यारा तारा होण क, लोरी तू सुणाव ऽ ।
लयर न का झूला प, झूलणा झुलाव ऽ ।
ऊषा उठी न थारा, म्हैं मूँडो धोवऽ ।
किरण न की साड़ी, थारा जळ मं ऽ भिगोवऽ ॥
ऊज रंग कदी कदी, संजा क ऽ दे तू ।
बदला मं तेकासी, बस कंकू ले तू ॥
पाप न ताप न सेवा ओ, तू भव सागर खेवा ओ । अन धन ....

(४)

सोमद् भवा रेवा, शिव शंकर प्यारी ।
बराबरी कर ऽ कसी, सुरसरी थारी ॥
थारा किनारा का, जो रयवासी ।
उनको छे तीरथ, बस तू काबा कासी ॥
धरम पुन्न को लाभ, तू उनख देती ।
रोटी रोजी देन ऽ, पकाड़ तू खेती ॥
छोटा मोटा गाँव नगर, थारा प ऽ निरभर ।
सुख अरु सुविधा, न दे उनख ऽ भर भर ॥
भर भर वाट ऽ तू मेवा ओ, कोठा कणगा भरेवा ओ । अन धन ...

(५)

वाकी तेकी चलीन, तू पच्छम मं आई ।
सुरिया का बी अपणा, पाछ - पाछ लाई ॥

विपदा न झेली, न जिनगी सी खेली ।
मनुस जिंदगी थारी, सग्गी सएली ॥
कई तो छे गम्भीर, कई छे उथली ।
परवत सी कई कई, तो करती चिबल्ली ॥
कई तो पहाड़ो न, जंगल को घुमटो ।
बस व्हाँ देखाय, थारो सरमीलो लटको ॥
घायड़ो मं तून, असा बाल बिखराया ।
ताण्डव देखी न, शिव शंकर थर्राया ॥
सयसर रुप रखेवा ओ, कुदरत की परखेवा ओ । अन धन ...

चल चल चल ओ दा

चल चल चल ओ चल ओ दा । म्हारा साथ मं चल ओ दा ।
बस दुई - दुई मं ऽ सबर कगाँ, पार करो दल - दल ओ दा ॥

(१)

सुणो पडोसेण की बीति, चैन कदी नी वा लीती ।
अपणू दुखड़ो केख ऽ कय ? चक्कर मं ऽ वा दिनभर रय ॥
घणा बाल गोपाल मं ऽ, घर का ऊ जंजाल मँ ऽ ॥
फुरसत नी एक पल ओ दा ॥

(२)

सक्कर - सांजी वा नी जाय, नवा काम सी वा कतराय ।
बड़ी गिरस्ती को अफसोस, दिन भर चल ऽ अढाई कोस ॥
सुख रत्ती भर नी लूट्यो, खाणू - पीणू बी छूट्यो ।
जिनगी छे मुसकल ओ दा ।

(३)

या सुन्ना सरकी काया, बुरी वासना की माया ।
संयम को पल्लो पकड़ो, चल ऽ गिरस्ती को छकड़ो ॥
पक्की - पाळ जमइल ऽ तू । जिनगी ठोस बणइल ऽ तू ॥
बरफ जसी मत गळ ऽ ओ दा ॥

(४)

कनक - कामणी रयण् होय, कर कर कर अठबी सी सोय ।
नी तो फिरी पछतायग ऽ, दिन दुनिया सी जाय ग ऽ ॥
दुख छाया तो दोष बढ़ ऽ ।कमी होय तो सबै लड़ ऽ ।
हुई जा तू उसकळ ओ दा ॥

(५)

एक सेरनी को बच्चो, खाय कदी नी ऊ गच्चो ।
सोयड़ी का सोळा पुत्तर, बठ कदी नी ऊ सुत्तर ॥
दुई होय राम अरु लछमण, या होय हलधर अरु किसन ॥
नी तो वांज निकळ ओ दा ।

(६)

लेणू होय सरवण सेवा; खाणू होय मीठा -मेवा ।
'एक अरु' की लालच त्याग; एत्ता मं अजमई ल ऽ भाग ॥
शान्ति अरु सन्तोस पकड़, उन्नति की तू पयड़ी चड़ ।
मन मत कर चंचल ओ दा ।

सुत सुनीति को एक थो, पण ऊ सब मं ऽ नेक थो ।
एक होय पण धुरव जसा, सदा सुवासेण धुरव - दिसा ॥
अमर आज बी भाल प ऽ । ककू जसो कपाळ प ऽ ॥
चमकी रयो अटल ओ दा ।

संजा फूली

संजा फुली आई या, चुल बुली आई ।
बाळ पणा की डेळ, लांगी नि लांगी ।
सुन्दरता मिली गई, बिना माँगी ॥
घर जाता सुरिया को, टिम - टिम टोकी ।
धरती - अगास मिल्या, भवँ नीकी ॥

नयणा कटीला, बदाम की बीजी ।
पल पल पलक, पलटती या जीजी ॥
सुनेरी बदामी रंग; होट हिंगूल्या ।
झरण्या मिठास; अधर आदा खूल्या ॥
रस मीसरी घुली - घुली आई या ।
संजा फूली आई या ।

या सुरिमल का; बुढ़ापा की बेटी ।
पच्छम पलंग जाई; सुख सेज लेटी ॥
असमान छुव ऽ एकी बांव न; उठेली ।
नाक मं नवो रंग; नथनी गठेली ॥
साड़ी सुनेरी; सबइ रंग रंगेली ।
चाँदी की चोली मं; चमकी चमेली ॥
कम्मर दादुर, सरकी सुवाई ।
निघा बी जमई, पण नजर नी आई ॥
बन्द कली जरा खुली आई या । संजा फूली आई या ॥
गोधुली धरती की, बेटी कुवारी ।
आई जरा जरा, तेम ऽ बी खुमारी ।
भूरी - भूरी लाल लाल, रंग वाळी छोरी ।
गांव - गांव गोया - गोया, आची रे गोरी ॥
धरती का सोला की, रज लइ उड़ी या ।
पवन का पर न सी, गगन चड़ी या ॥
गाय न का वाचरु, हमर्‍या रे सारा ।
ममता का गगन मं, छुट्या रे फुवारा ॥
दूद की बगोणी ढुली - ढुली आई या । गोधुली आई या ॥
संजा सलोनी एक, मिळण क लपकी ।
रुप की पेटी, नरबदा मं टपकी ॥
धरती अगास की, ई दुई बेटी ।
रुप - गरब कूण, मोटी कूण हेटी ॥
चारी मेर धरती प, दिवला रे दमक्या ।
सुरिया को काम, समाळी न गमक्या ॥

तन - दियो आतम - तेल, डुबी बत्ती ।
मन को अँधारो, मिट्यो रत्ती रत्ती ॥
धरती सरग झूला, झूली आई या। गोधुली आई या ॥
धूल मं मिली, संजाफुली रुपरुड़ो ।
खुली एक झटका मं, गरब की पूड़ी ॥
देखो वैसी चाँद की, चाँदणी आई ।
उतरी सरग सी न, धरती प छाई ॥
संजा जराक फूलीं, हुइ गइ कपुर वा ।
चाँदणी चार दिन, चिड़ी जसी भुर वा ॥
बाकी बची रे धूल, धरती की प्यारी ।
याज सदा रय, आतमा की सवारी ॥
आतमा की थिरता कबुली आई या । गोधुली आई या ॥
माटी उगाव फूल फल, प्यारा - प्यारा ।
एकासी मनुस का, होय वारा - न्यारा ॥
संजाफुली की होय, कोती उमर रे ।
गोधुली धरती की, अक्खय - अमर रे ॥
धरती का गीत, गुंजा म्हारा प्यारा ।
देखत भूली का, भुल रे नजारा ॥
होय परलय, डूबी जाय घाटी घाटी ।
नांव प बच ऽ बस, मनु कीज माटी ॥
सिरजन जन - माडुली आई या । गोधुली आई या ॥

— ❧ —

निमाड़ी गीत

हरा हरा झाड़ लगाओ । इन धरती का भाग जगाओ ॥

(१)

नव खण्ड धरती को वनखण्ड उजड़यो ।
धूप सी कुराड़ी की रुप एको बिगड़यो ।
तार - तार हुयो एकी साड़ी को पल्लो ।

लाव केम ऽ बांदी न भरमोक गल्लो ॥
हरो रंग लुगडो रंगाओ ।

(२)

जिनगी वणाओ स्यामी तम पर खातिर ।
मेउळ सा बरसो स्यामी तम झिर मिर ।
तन मन सो मेटो तम स्वारथ को झगड़ो ।
फल बाटो ऐसी वैसो मार कोई दगडी ॥
असा तम अम्बा उगाओ ।

(३)

तर ऽ तर ऽ की त्यो बिमारी न आई ।
दवा दारु से तेक को काम नी आई ।
सुरुपनखा की तुरुप चाल देखो ।
खरदूषण सरको परदूषण लेखो ॥
राम बी तेख ऽ भगाओ ।

(४)

जेत्ता छे हात वतरा झाड़ लगी जाय ।
धरती की सोबा सो चाँदणी झपी जाय ।
मांग्यो पाणी देग ऽ सबक ऽ ऊ कालो बारिद ।
राम राज आव सुख मं हँसा हम खद खद ॥
धरती क अद्दर थिगाओ ।

(५)

हरा झाड़ तूख दुख मख ऽ सुख बोलां ।
काटो हेडाडां तो वई डोला खोलां ।
दूषित वायु लई न प्राण वायु परस ऽ ।
दुख ऽ झेलो सुख वाटी वाटी न हरस ऽ ॥
तेका गीत क्यों नो गुन गुनाओ ।

(६)

एक झाड़ कोटी हवन फल पावां ।
आवागमन को ऊ फंदो बचावां ।
मुकती को मारग यो छे सरल सट ।
अम्बा की बाग लगाओ तम झट पट ॥
धरती पर सरग जगाओ ।